city भास्कर

ग्लैमर

JABALPUR, TUESDAY 11/11/2014

नए अनुसंधानों व तकनीकों का मिलेगा लाभ

जबलपुर ▶ उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में शोध सलाहकार समूह की दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मप्र, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, एवं उड़ीसा राज्यों के वरिष्ठ वन अधिकारी, शोधकर्ता, पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाले अशासकीय संस्थाओं के प्रतिनिधि आदि मौजूद थे। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद भूतपूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. पीके शुक्ला ने किया। संस्थान के निदेशक डॉ. यू प्रकाशम ने कहा कि मध्य भारत आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है एवं संस्थान के आदिवासी भाईयों एवं अन्य हितग्राहियों के समूहिक विकास हेतु अनुसंधान कार्य करने की जिम्मेदारी बनती है। संस्थान विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों में नई-नई तकनीक विकसित कर यह कार्य बहुत ही अच्छे ढंग से कर रहा है। उन्होंने कहा कि विकसित तकनीकें हितग्राहियों को प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने बताया कि पिछले दो सालों में संस्थान ने मप्र एवं छत्तीसगढ़ के कारीगरों व किसानों के लिए बांस हस्तशिल्प पर विशेष प्रशिक्षण, अशासकीय संस्थाओं, वन कर्मियों, किसानों व आदिवासी भाईयों को संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों पर महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं।

शोध सलाहकार समूह की बैठक, महाराष्ट्र के प्रधान मुख्य वन संरक्षक का प्रस्ताव, जैव विविधता एवं वानिकी की हल होंगी समस्याएं

महाराष्ट्र बोला हमें भी चाहिए टीएफआरआई का शोध केन्द्र

टीएफआरआई में बैठक के दौरान चर्चा करते शोध सलाहकार समिति के सदस्य। -पत्रिका

जबलपुर

jabalpur@patrika.com

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) के शोध कार्यों से जैव विविधता का संरक्षण आसान हुआ है। टीएफआरआई के एक शोध केंद्र की महाराष्ट्र में स्थापना बेहद जरूरी है। इससे राज्य के पश्चिमी घाट की जैव विविधता एवं वानिकी संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जा सकेगा। ये बातें महाराष्ट्र के प्रधान मुख्य वन संरक्षक सरफराज हुसैन ने कहीं। वे सोमवार को टीएफआरआई में शोध सलाहकार समूह की बैठक को संबोधित कर रहे थे। दो दिवसीय बैठक की शुरुआत में बतौर मुख्य अतिथि मप्र के पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक पीके शुक्ला उपस्थित थे।

बैठक में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा से आए वन अधिकारियों, विशेषज्ञों, किसानों के सामने जैव विविधता के संरक्षण के लिए भविष्य में संचालित की जाने वाली शोध परियोजनाओं का प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रस्तावों और उनके लाभदायी निष्कर्षों की संभावना के आधार पर अगले वर्ष के लिए शोध परियोजनाओं का चयन किया जाएगा। इस दौरान अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. जितेंद्र अग्रवाल, डॉ. एससी शर्मा, डॉ. यश सत्यम, टीएफआरआई के निदेशक डॉ. यू प्रकाशम, हरिओम सक्सेना उपस्थित थे।

नेशनल रिपोजेटरी पर प्रोजेक्ट

नई शोध परियोजनों के प्रारंभिक चयन के लिए वैज्ञानिकों के प्रस्तावों पर चर्चा के पहले नेशनल रिपोजेटरी की स्थापना के महत्वकांक्षी परियोजना पर चर्चा हुई। इसके तहत उड़ीसा के दलदलीय क्षेत्रों में मिलने वाले कीटों का अध्ययन एवं उन्हें संरक्षित करके संस्थान के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत बेहतर नेशनल रिपोजेटरी तैयार किया जाना प्रस्तावित है। बैठक में दो दिन में चारों राज्यों से चयनित कुल 15 शोध परियोजनाओं का आवश्यकता संबंधी ब्योरा प्रस्तुत किया जाना है। पहले दिन सात शोध परियोजनाओं का प्रस्तुतिकरण हो पाया।

नई दिल्ली से होगा अनुदान पर फैसला

बैठक में संस्थान द्वारा संचालित शोध कार्यों की समीक्षा की गई। अधिकारियों ने वन कीट, वन रोग, वन संवर्धन, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण एवं प्रबंधन से संबंधित शोध परियोजनाओं के प्रस्तावों के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव, फायदे सहित समस्त बिंदुओं का बारीकी से अवलोकन किया। सभी परियोजनाओं को ग्रामीण एवं आदिवासियों की आजीविका से जोड़े जाने के प्रयास के लिए भी जोर दिया। इस बैठक में चयनित शोध परियोजनाओं को अंतिम स्वीकृति के लिए नई दिल्ली स्थित विभागीय मुख्यालय में भेजा जाएगा। जहां, परियोजना को मंजूरी मिलने पर अनुदान आवंटित होगा।

अकाष्ठ वन उत्पादों पर प्र... होगी विस्तार से चर्चा

जबलपुर ■ राज न्यूज नेटवर्क

टीएफआरआई में दो दिवसीय बैठक का शुभारंभ

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) जबलपुर में शोध सलाहकार समूह की दो दिवसीय बैठक का शुभारंभ हुआ। बैठक का शुभारंभ डॉ. पीके शुक्ला पूर्व पीसीसीएफ एवं टीएफआरआई के पूर्व निदेशक द्वारा किया गया। बैठक में मप्र, महाराष्ट्र, छग एवं उड़ीसा राज्य के वरिष्ठ वन अधिकारियों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के रिसर्च स्कॉलर्स शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि डॉ. पीके शुक्ला ने अपने उद्बोधन में संस्थान द्वारा कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से [illegible] विकसित तकनीकों एवं शोध कार्यों [illegible] को विभिन्न हितग्राहियों तक पहुंचाने [illegible] के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने [illegible] अपने-अपनी बात रखते हुए कार्बन [illegible] अधिशोषण एवं जलवायु परिवर्तन [illegible] पर कार्य करने पर [illegible] बल दिया। डॉ. यू [illegible] प्रकाशम ने बैठक को [illegible] संबोधित करते हुए [illegible] कहा कि मध्य भारत [illegible] आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है एवं [illegible] संस्थान की आदिवासियों एवं अन्य [illegible] हितग्राहियों के सामूहिक विकास के [illegible] लिए अनुसंधान कार्य करने की [illegible] जिम्मेदारी बनती है। संस्थान [illegible] विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों में नवीन [illegible] तकनीक विकसित कर बेहतर ढंग [illegible] से कर रहा है।

TheHitavada
JABALPUR ■ Tuesday ■ November 11 ■ 2014

RESEARCH ADVISORY GROUP MEETING BEGINS AT TFRI

■ Staff Reporter

Guests sharing dais during the meeting of Research Advisory Group at TFRI.

TWO days Research Advisory Group (RAG) meeting started at Tropical Forest Research Institute (TFRI) Jabalpur on Monday.

The meeting is being organised under the supervision of Institute under Indian Council of Forestry Research and Education Ministry of Environment and Forest, Government of India and will conclude on November 11.

Dr U Prakasham, Director TFRI, welcomed the Chief Guest Dr P K Shukla, retired Principal Chief Conservator of Forest (PCCF), Madhya Pradesh and guest of honour, Mafyul Hussain, PCCF Maharastra by presenting bouquets.

In the welcome address given by the Director, TFRI, Dr Prakasham briefed about the purpose of RAG meeting. He highlighted that the scientists of TFRI are passing a considerable time in the fields to solve the problems raised by the field officers in the sates of Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Maharashtra and Orissa. He attracted the august gathering towards Forest Museum and Interpretation Centre (FMIC) recently established at TFRI whose purpose is to make available the forestry related knowledge to researchers, academicians and students at one place only.

Dr Nitin Kulkarni briefed him about the mandate of institute and various research activities currently being pursued at the institute. Research works and activities carried out by the Institute were well appreciated by the house.

P Subramanyam, GCR of the Institute highlighted about the techniques and technologies like integrated management of insects and pests, various agroforestry models, sustainable harvesting practices of forest products, mass production of bio-fertilizers and management of fungal diseases in forest nurseries, storage methods for seeds etc being extended to stakeholders through workshops/ training programmes at Institute level as well as at various places of states under its jurisdiction.

Guest of honour, Mafyul Hussain appreciated the research works being carried out by TFRI scientists and wished to establishment of a centre in Maharashtra state. The Chief Guest Dr P K Shukla stressed the works on climate change, carbon sequestration and population dynamics of important insects. He also emphasised the need for development of sustainable managed models for villages in the vicinity of forest areas by involving IFM committees. PRO, Hari Om Saxena informed that these meetings perform a major role in scrutinising and finalizing the project proposals in relation to requirements of Skateholders. The Senior Forest Officers of Madhya Pradesh, Chhattisgarh and Maharastra distinguished Academicians and Researchers from various eminent Institutes, civil society members, progressive farmers and other stakeholders will participate in the meeting and provide their valuable inputs and suggestions for fine tuning the project proposals so as to benefit the society.

खोज | टीएफआरआई करेगा शोध, जंगली मकड़ियों को पकड़कर पता लगाएंगे खासियत

रसायन से नहीं, अब मकड़ी से मारेंगे कीड़े

जबलपुर(नप्र)। नर्सरी के पौधों और फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए अब रसायनों के छिड़काव की जगह मकड़ियों की मदद ली जाएगी। मकड़ी के शरीर में इन कीड़ों को मारने वाले गुण की पहचान के लिए उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान केन्द्र (टीएफआरआई) शोध करने जा रहा है।

इस विषय पर शोध कर रहे डॉ. सी नक्षलवारों ने बताया कि उन्हें शुरूआती जांच में बेहतर परिणाम मिले हैं। इस पर वे आगे क्या करेंगे, इस बारे में सोमवार को टीएफआरआई में चार राज्यों की रिसर्च को एडवाइजरी कमेटी के सामने रखा गया। इस दौरान मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के पीसीसीएफ, फॉरेस्ट साइंटिस्ट, प्रोफेसर्स और जंगलों से जुड़े जानकार मौजूद रहे।

ये प्रोजेक्ट भी रखे गए

>> उड़ीसा के समुद्र तट से लगे जंगल के पेड़ों की जड़ों में रहने वाले जीवों पर शोध

>> शहद देने वाली मक्खी और उससे वनों पर होने वाला असर

>> जंगल में साल के पेड़ों से गिरने वाले बीजों से निकलने वाले पौधों पर शोध

>> जंगली इलाकों में ट्रेन के पहिए की गर्मी से पेड़ों पर असर

आज होंगे फाइनल

सेंटर के डायरेक्टर यू प्रकाशन ने बताया कि 4 राज्यों के इन वैज्ञानिकों द्वारा जंगलों से जुड़े इलाकों की समस्या के आधार पर प्रोजेक्ट को तैयार किया गया है। इन्हें सेंटर में हुई चारों जोन की बैठक में रखा गया। यहां से जिन प्रोजेक्ट को स्वीकृति मिलेगी, उन्हें देहरादून स्थित इंडियन कौंसिल ऑफ वन अनुसंधान सेंटर देहरादून भेजे जाएंगे। कितनों को आगे भेजना है यह निर्णय मंगलवार को होगा।

तीन चरण में होगा काम

पहले स्टेप में...

- प्रदेश के जंगल और रहवासी इलाकों में मिलने वाली मकड़ियों की प्रजातियां पहचानेंगी।
- हर प्रजाति की खासियत, वन और इंसान को उससे फायदे का पता लगाया जाएगा।

दूसरे स्टेप में...

- मकड़ियों में वन और पौधे के कीड़े मारने की गुण पर केन्द्रीय होकर रिसर्च होगा।
- इस गुण से इंसान को होने वाले नुकसान का पता लगाने टेस्ट होगा।
- नुकसान के गुण को दूर कर फायदेमंद बनाने के लिए एक्सपर्ट की मदद लेंगे।

तीसरे स्टेप में...

- जंगली मकड़ियों से एकत्रित जानकारी के आधार पर मानव उपयोगी चीजों पर काम होगा।
- मकड़ी के पेट से निकलने वाले जाल को इंसान के लिए फायदेमंद बनाने पर रिसर्च होगी।
- जिंट प्रजाति की मकड़ी मिली तो इसके जाले से आर्मी के लिए बुलेट प्रूफ जैकेट बनाई जाएगी।